प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 02 मार्च, 2017 को चिकित्सा विश्वविद्यालय के कलॉम सेंटर में माइक्रोबायोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो0 अमिता जैन के अध्यक्षता में माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा **'एक्यूट इंसेफलाइटिस सिन्ड्रोम'**(AES) के ऊपर एक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लखनऊ तथा अन्य स्थानों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम मे प्रो0 यू0बी0 मिश्रा, प्रो0 अरून चतुर्वेदी, प्रो0 अमिता जैन, प्रो0 मधुमति गोयल सहित विभिन्न विभागों के चिकित्सा शिक्षक, चिकित्सक और चिकित्सा छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

इस अवसर पर डॉ0 पी0के0 सेन, अपर निदेशक राष्ट्रीय वेक्टर बर्न डिजीज प्रोग्राम, प्रो0 टी0एन0 ढोले, विभागाध्यक्ष माइक्रोबायोलॉजी विभाग, एसजीपीजीआई सहित केजीएमयू तथा अन्य चिकित्सा संस्थानों के वक्ताओं द्वारा वक्तब्य दिया गया।

कार्यक्रम में प्रो0 रश्मि कुमार ने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 2006 में एक्यूट इंसेफलाइटिस सिन्ड्रोम शब्द जापानी इंसेफलाइटिस (JE) की निगरानी के प्रयोजन के लिए गढ़ा गया है। AES दिमाग में वायरल या नानवायरल किसी भी कारण के इंफेक्शन से हो सकता है। लखनऊ में AES से ग्रसित 300–400 बच्चे हर वर्ष आते है ज्यादातर 20 से 25 प्रतिशत गोरखपुर डिविजन को छोड़कर पूर्वी जिलो से आते है। 80 और 90 के दशक में पूर्णतया न्यूरोलॉजिकल सिन्ड्रोम से पीड़ित बच्चों मे से 23 प्रतिशत में JE पाया जाता था जबकि 40 प्रतिशत का कोई कारण समझ में नही आता था। 2005 मे इसको महामारी के रूप लेने के पश्चात JE से प्रभावित जिलों मे 1 से 15 साल के बच्चों में JE का टीकाकरण किया गया। इस टीकाकरण के पश्चात AES के कारण होने वाले JE में काफी कमी आई है परन्तू AES अभी भी हो रहा है। AES का एक गंभीर रूप JE है जिसमें मृत्युदर काफी है और लम्बे समय का न्यूरोलॉजिकल समस्यायें भी ज्यादा उत्पन्न होती है।

डॉ0 कमल कुमार सावलानी ने बताया कि दिमाग की पैरेन्काइमा में बुखार से सूजन, चेतना में प्रत्यावर्तन, उद्वेग और फोकल न्यूरोलॉजिकल लक्षण इंसेफलाइटिस की ओर डाइग्नोसिस करता हैं। यह वायरल इंफेक्शन के बहुत सदृष होता है। इसकी पहचान के लिए प्रकल्पित डयाग्नोसिस के साथ न्यूरोइमैजींग, CSF, और EEG करना चहिए।

कार्यक्रम में प्रो0 अमिता जैन ने बताया कि AES मुख्यतः आसाम, बिहार, कर्नाटका, तमिलनाडू, और उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा पाया जाता है। इन प्रदेशों में देश का 80 प्रतिशत AES का केस देखने को मिलता है। यह एक भौगोलिक प्रतिबंधित और मौसमी बिमारी है।

कार्यक्रम की आयोजन सचिव डॉ0 पारूल जैन ने कहा भारत में AES का मुख्य कारण वायरस है। जबकि बैक्टिरिया, फंगस, पैरासाइसट्स, स्पाइरोकेटस, केमिकल और विषाक्त पदार्थों को भी पिछले कुछ दशक से AES फैलाने के कारण के रूप मे देखा जा रहा है।

सीएमई में चिकित्सा जगत के विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा संयुक्त रूप से इस महामारी के ऊपर, इसके एटियोलाजी, डायग्नोसिस, मैनेजमेंट और AES से बचाव के तरीको पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में कई एनजीओ जैसे PATH & WHO के विशेषज्ञों द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।